एं. भो.वि./एए.डी.-11/80-84/27877. —वृत्ति इरियाणा के राज्यपास की राये है कि मै० भाटिया प्रिटिंग प्रैस एफ 22 एन० श्राई० टी० फरीदाबाद, के श्रमिक श्री गोविन्द सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मृत्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रोधोणिक विधाद है;

भीर पुंकि हरियाचा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करता वांछमीय समझते हैं;

इसिनए, धव, धीबोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की झारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियागा के राज्यताल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, विनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, विनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रृषिनियम की धारा 7 के अधीन गरित श्रम स्थायालय, फरीदाबाद, को विवादगस्त या उससे सुखंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिश्व करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी गोविन्द सिंह की सेवाओं कासमापन न्यायोचित तथा और है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हकदार है ?

सं .मो.बि./एफ. डी. 1.1/80-84/27884. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० भाटिया प्रिटिंग प्रैस एफ. 22, एन० ग्राई० टी० फरीदाबाद के श्रीमक श्री करतार सिहत्या उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीकोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रीधित्यम, 1947, की धारा 10 की उपदारा (1) के खण्ड. (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रावितयों का श्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपास इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 परवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए चिंदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा, श्रीमक के दीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयना सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री करतार सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकाबार है ?

सं को वि/एफ डी.-11/80-84/27891 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं. भाटिया प्रिटिंग प्रेस एफ 22, एन अर्डिटी परीदाबाद, के अमिक श्री राम प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखिन मामले में कोई मौद्योगिक विवाद हैं;

ग्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्याय निर्णय हेतु निर्विष्ट करना बालनीय समझते हैं;

इसिनए, भव, भौगोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 को धारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं० 5415-3-भम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं० 11495-जी-भम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे हुँचेगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, यर विवाद से मुसंगत ग्रथवा संविद्य मामला है:—

क्या श्री राम प्रकाश की सेवाधों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी-~11/80-84/27898.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं भाटिया प्रिन्टिंग प्रैस एफ 22, एन॰ माई॰ टी॰ फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद खिलत सामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

भौर भूंचि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं :

इसलिए, अब, भौद्योगिन निवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गृक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हुए अभिसूत्रना मं. 11195-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी ; 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद , को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्रंग के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के भीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राजेन्द्र प्रसाद र्शमा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं श्रो वि/एफ. डो.-11/80-84/27905---चूंकि हरियाणा के राज्यताल को राय है कि में भाटिया प्रिटिंग प्रेंस एफ/22, एन. ग्राई. टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राधे शाम तथा उसके प्रबन्धकों, के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई भीद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्याधिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करता बांछनीय समझते हैं ;

इपनिए, ग्रव, ग्रोबोगि 5 निवाद ग्रिशितियम, 1947 की धारा 10 की उप्रधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिस्थाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

ं क्या श्री राधे शाम की सेवाग्रों का संमापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?.

सं. मो.वि./एफ.डी.-11/80-84/27912.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैसर्ज भाटिया प्रिटिंग प्रैस, एफ/22, एन०प्राई०टी०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री प्रताप सिंह तथा उसके प्रवश्वकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक दिवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, भीडोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्य गल इस के द्वारा सरकारों प्रधिसूत्रता सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पदते हुए प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनियंग के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अर्थवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या 'श्री प्रताप सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? सदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./एफ.डी.-11/80-84/27919.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ भाटिया प्रिंटिंग प्रस एफ/22 एन. माई. टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री कुणाल सिंह तथा उसके प्रश्चकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भी शोगिक विवाद है;

भीर पूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान का गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिंधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिनूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री कुशाल सह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?